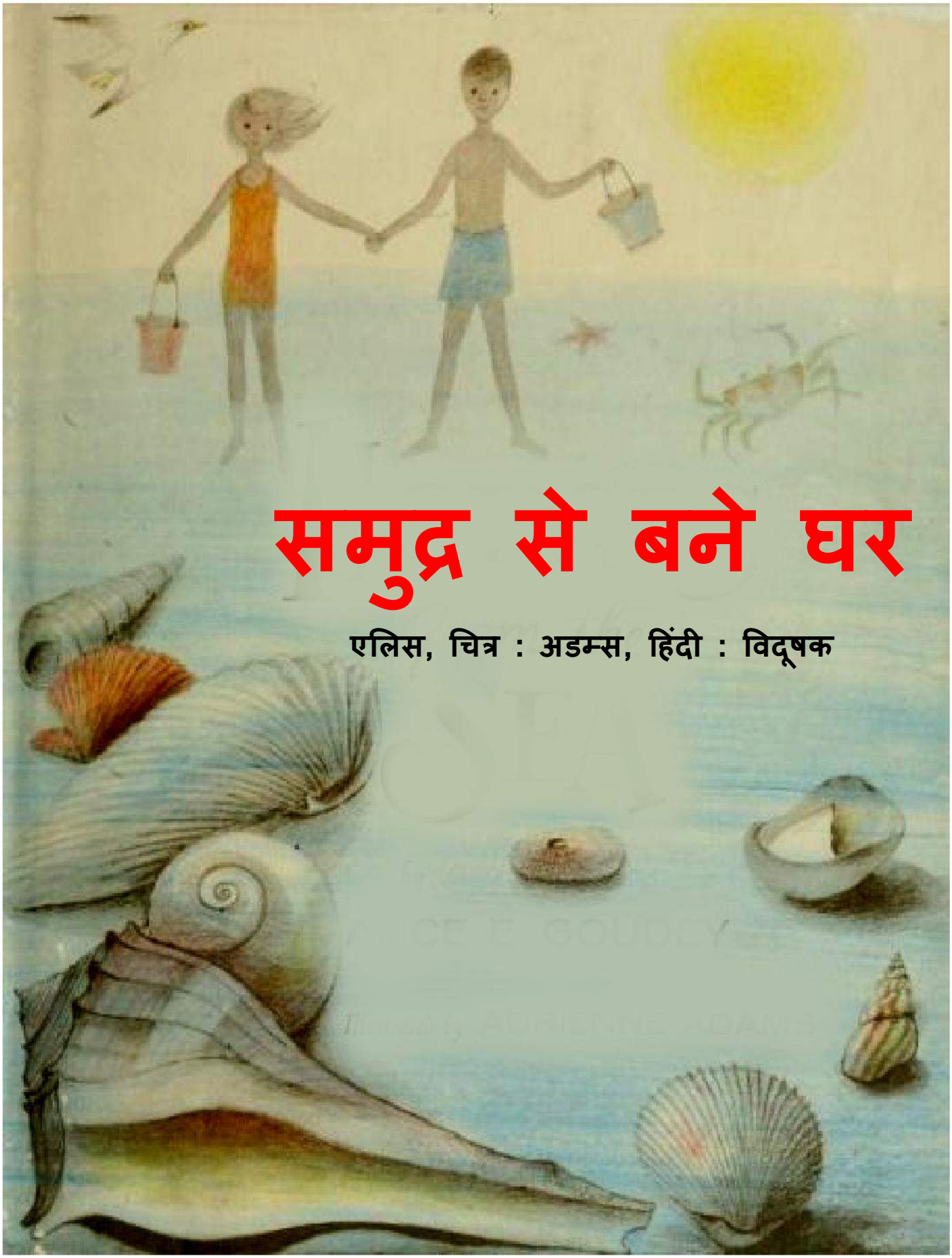

समुद्र से बने घर

एलिस, चित्र : अडम्स, हिंदी : विदूषक

यह किताब उन दो बच्चों के बारे में है जो समुद्र के पास ही रहते हैं. रोज़ाना समुद्र की ऊंची लहरें तट पर आती हैं और वापसी में बहुत सारी सीपियाँ रेत के तट पर छोड़ जाती हैं. बच्चे उन सीपियों को बेहद अचरज से देखते हैं. सीपियाँ अलग-अलग आकारों और रंगों की होती हैं. उनमें से हरेक सीपी के अन्दर कभी कोई छोटा जीव रहता होगा.

जब तुम इस सुन्दर पुस्तक को पढ़ोगे और उसमें सीपियों के खूबसूरत चित्र देखोगे तो तुम भी उन बच्चों जैसे ही सीपियों के बारे में सोचने लगोगे. तुम अचरज करोगे कि उन सीपियों के सामान्य नाम कैसे पड़े. एक सीपी का नाम है छोटी चप्पल (टाइनी-स्लिपर) और दूसरी सीपी बिल्कुल स्पाइरल सीढ़ी जैसी है.

उस दिन बच्चों ने जो सीपियाँ इकट्ठी कीं उनमें वो रोजाना कुछ और सीपियाँ जोड़ते हैं. धीरे-धीरे करके उनका संग्रह बढ़ता जाता है. अंत के दो पेजों पर सीपियों के रंगीन चित्र और उनके नाम हैं. सीपियाँ कैसे बनती हैं? उनके अलग-अलग रंग-रूप कैसे बनते हैं? इस रहस्य को भी इस किताब में समझाया गया है.

अगर तुम समुद्र के किनारे नहीं भी रहते हो, फिर भी तुम इन सीपियों को किसी म्यूजियम में देख सकते हो और उनका आनंद ले सकते हो.

समुद्र से बने घर

एलिस, चित्र : अडम्स, हिंदी : विदूषक

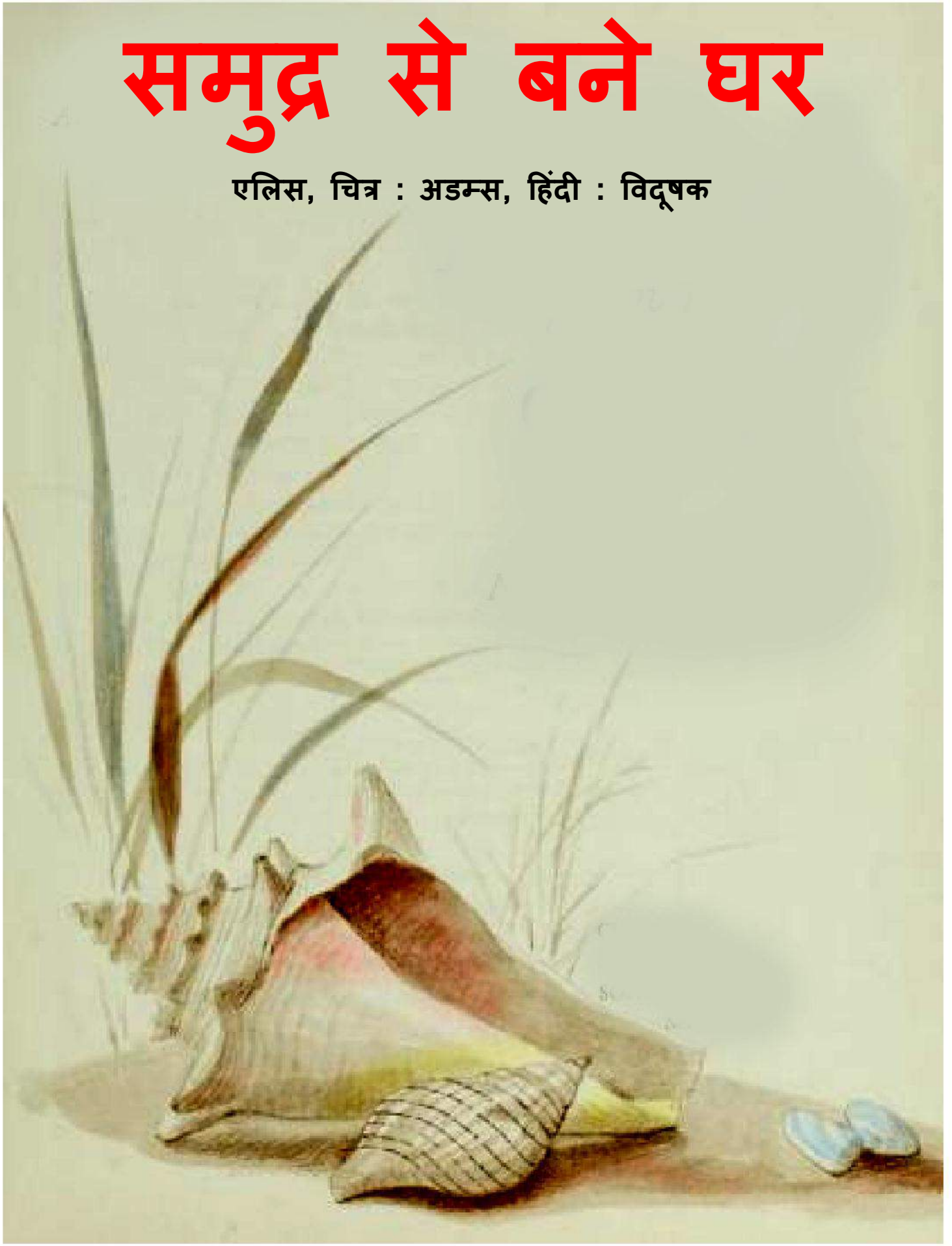

लेखक के दो शब्द

अगर तुम समुद्र तट पर चल रहे हो तो तुम्हें रेत में या पत्थरों में कई सीपियाँ पड़ी मिलेंगी. तुम उनमें से एक सीपी को उठाते हो और अचरज करते हो कि वो रंगीन सीपी कभी किसी जिंदा जीव का घर रही होगी! उस सुन्दर सीपी को वहीँ छोड़कर जाने का तुम्हारा मन नहीं करेगा. इसलिए हो सकता है तुम उसे अपनी जेब में रख लो. तट पर कुछ आगे जाने पर शायद तुम्हें कोई और सुन्दर सीपी दिखे. तुम्हें हरेक सीपी, पिछली सीपी से ज्यादा सुन्दर नज़र आएगी. धीरे-धीरे तुम्हारी जेब सुन्दर सीपियों के खजाने से ऊपर तक भर जाएगी. सीप-संग्रह की यह तुम्हारी शुरुआत होगी.

सीपियों को इकट्ठा करना और उनमें कौन से जीव रहते थे उनके बारे में जानना दुनिया में एक बेहतरीन हॉबी यानि शौक है.

सीपियाँ, अन्य जीवों की तरह ही अलग-अलग परिवारों की सदस्य होती हैं. एक ही परिवार की सीपियों को देश के अलग-अलग तटों पर पाया जा सकता है.

तुम शायद समुद्र के किनारे नहीं रहते हो और इसलिए इन बच्चों जैसे खुशनसीब न हों. तुम्हें शायद एक दिन में, या एक स्थान पर बहुत सारी सीपियाँ न मिलें. पर किसी-न-किसी दिन कोई तूफ़ान दुनिया के किसी दूसरे कोने से तुम्हारे तट पर नायब सीपियाँ लाकर पटक देगा.

बच्चों की इस किताब में हमने सीपियों के वैज्ञानिक नामों की बजाए सिर्फ सामान्य और प्रचिलित नाम ही उपयोग किए हैं. तुम्हें सीपियों पर विस्तृत जानकारी लाइब्रेरी की अनेकों पुस्तकों में मिल जाएगी.

जब हम अपनी बाल्टियाँ और बेलचे लेकर समुद्र के किनारे गए तो लहरें हमसे मिलने आईं. वो खुश थीं कि हम वहां पर आए. लहरें जोर की आवाज़ के साथ आईं. समुद्र का सफ़ेद फेन हमारे पैरों के चारों ओर तेज़ी से घूमने लगा.

और फिर लहर दुबारा से, समुद्र में विलीन हो गई.

मेरी बहन ने लहर को बुलाया, और वो जोर से चिल्लाई, “वापिस आओ! वापिस आओ, और हमारे साथ आकर खेलो!”

शायद समुद्र ने मेरी बहन की बात सुनी. क्योंकि कुछ ही देर में एक ऊंची लहर वापिस आई.

पर .....

...लहर आई ज़रूर, पर फिर से समुद्र ने उसे वापिस खींच लिया.

समुद्र के जिस हाथ ने लहर को खींचा उसे हम नहीं देख पाए.

हमारा मित्र समुद्र हमारे साथ खेलने के लिए रुक नहीं सका पर वो हमारे लिए बहुत से खजाने लाया और उन्हें वो रेत पर हमारे लिए बिखरा गया.

हमें दो चन्द्रमा-सीप (मून-शेल्स) मिलीं. वे बेहद गोल और चिकनी थीं. वे हमारी हथेली में एकदम फिट हुईं. इन सीपियों में कभी छोटे-छोटे जीव रहते होंगे. यह सीपियाँ उन जीवों का घर होंगी. वो जीव अब कहीं और चले गए होंगे, पर उनके घरों को हम अपने पास रख सकते थे. हमने उन दोनों मून-शेल्स को अपनी बाल्टी में रखा. और फिर ....

...एक और लहर किनारे पर आई.

हमें वहीं एक चिड़िया दिखी – सैंडपाइपर जो छोटे कीड़ों और हिप्पा-केकड़ों का शिकार कर रही थी. हिप्पा-केकड़े गीली रेत पर लहर के आगे-आगे दौड़ रहे थे. उनके पैर बिल्कुल माचिस की तीलियों जैसे लग रहे थे.

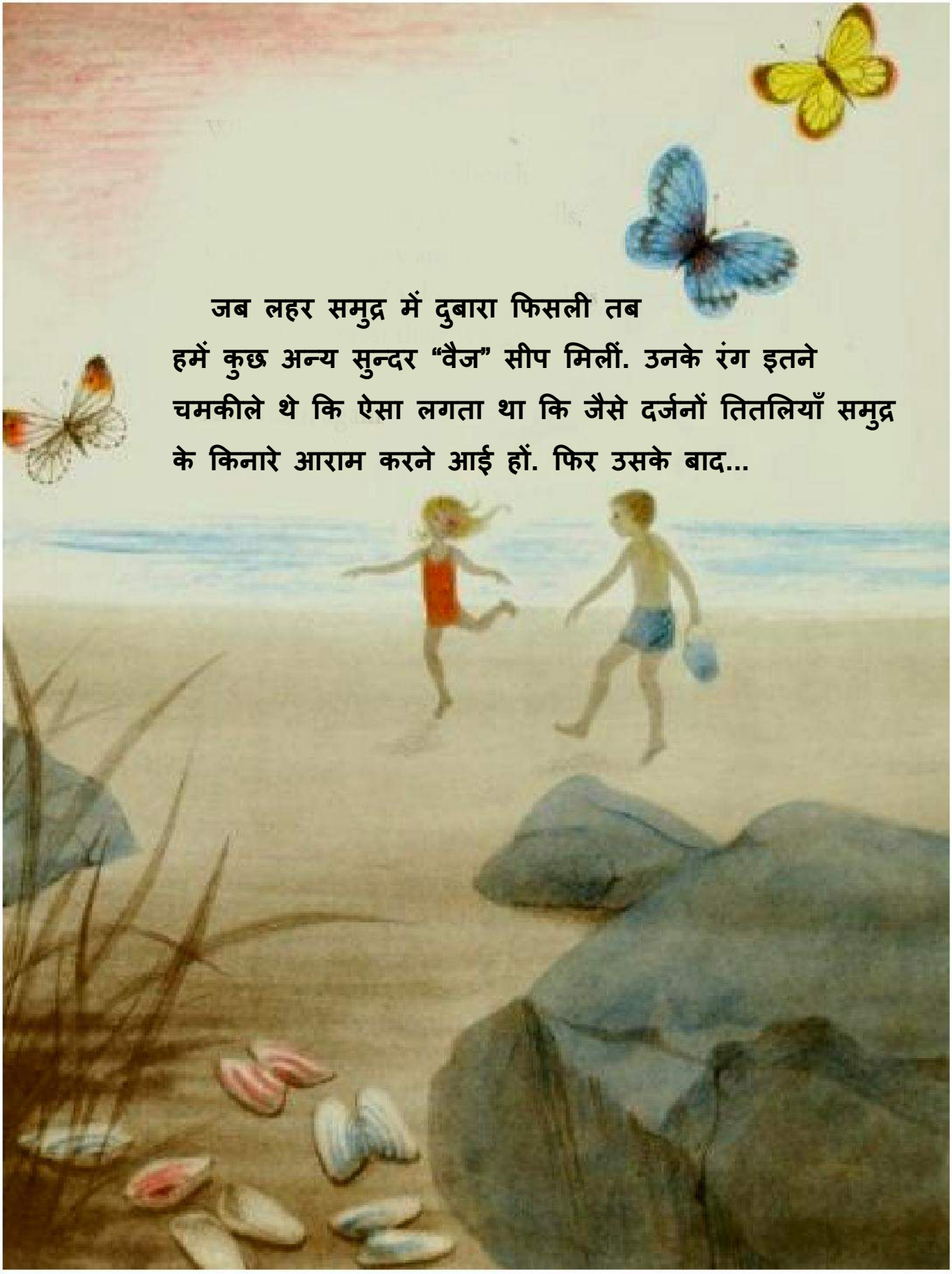

जब लहर समुद्र में दुबारा फिसली तब
हमें कुछ अन्य सुन्दर “वैज” सीप मिलीं. उनके रंग इतने चमकीले थे कि ऐसा लगता था कि जैसे दर्जनों तितलियाँ समुद्र के किनारे आराम करने आई हों. फिर उसके बाद...

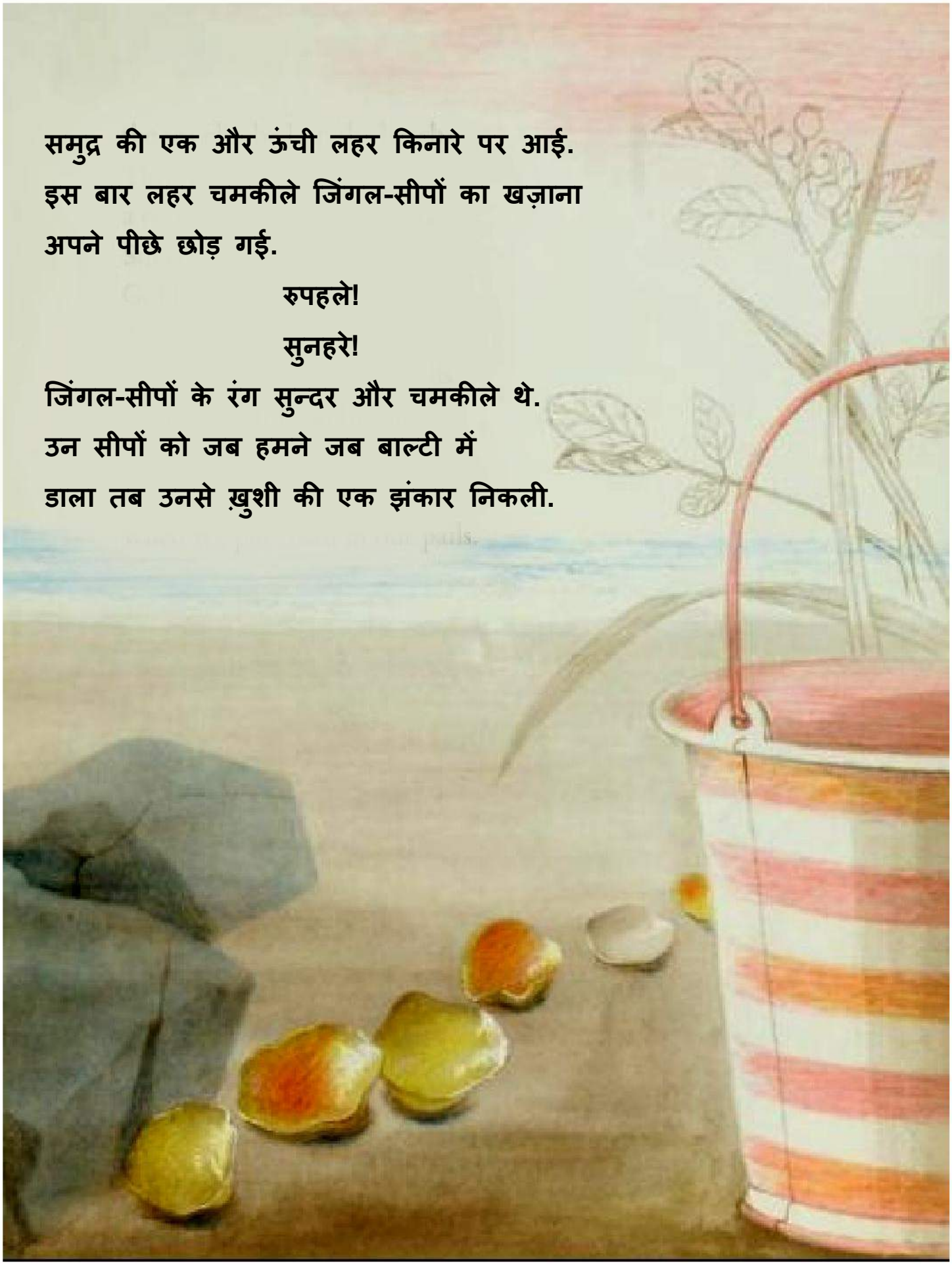

समुद्र की एक और ऊंची लहर किनारे पर आई.
इस बार लहर चमकीले जिंगल-सीपों का खज़ाना
अपने पीछे छोड़ गई.

रुपहले!

सुनहरे!

जिंगल-सीपों के रंग सुन्दर और चमकीले थे.
उन सीपों को जब हमने जब बाल्टी में
डाला तब उनसे ख़ुशी की एक झंकार निकली.

हमें जो अगला खज़ाना मिला वो सबसे सुन्दर था. वो थे “परियों के पंख” (एंजेल-विंग्स). वो इतने सफ़ेद और सुन्दर थे कि उन्हें देखकर लगता था कि वो सीधे स्वर्ग से आए हों.

फिर हमें कुछ “काकिल-शेल्स” मिले. उनके ऊपर उभरी हुई लकीरें थीं. उनकी किनार पर बिल्कुल आरी जैसे दांत थे. जब हमनें दो सीपियों को एक साथ रखा तब उनसे एक दिल के आकार का घर बना.

आगे हमें ....

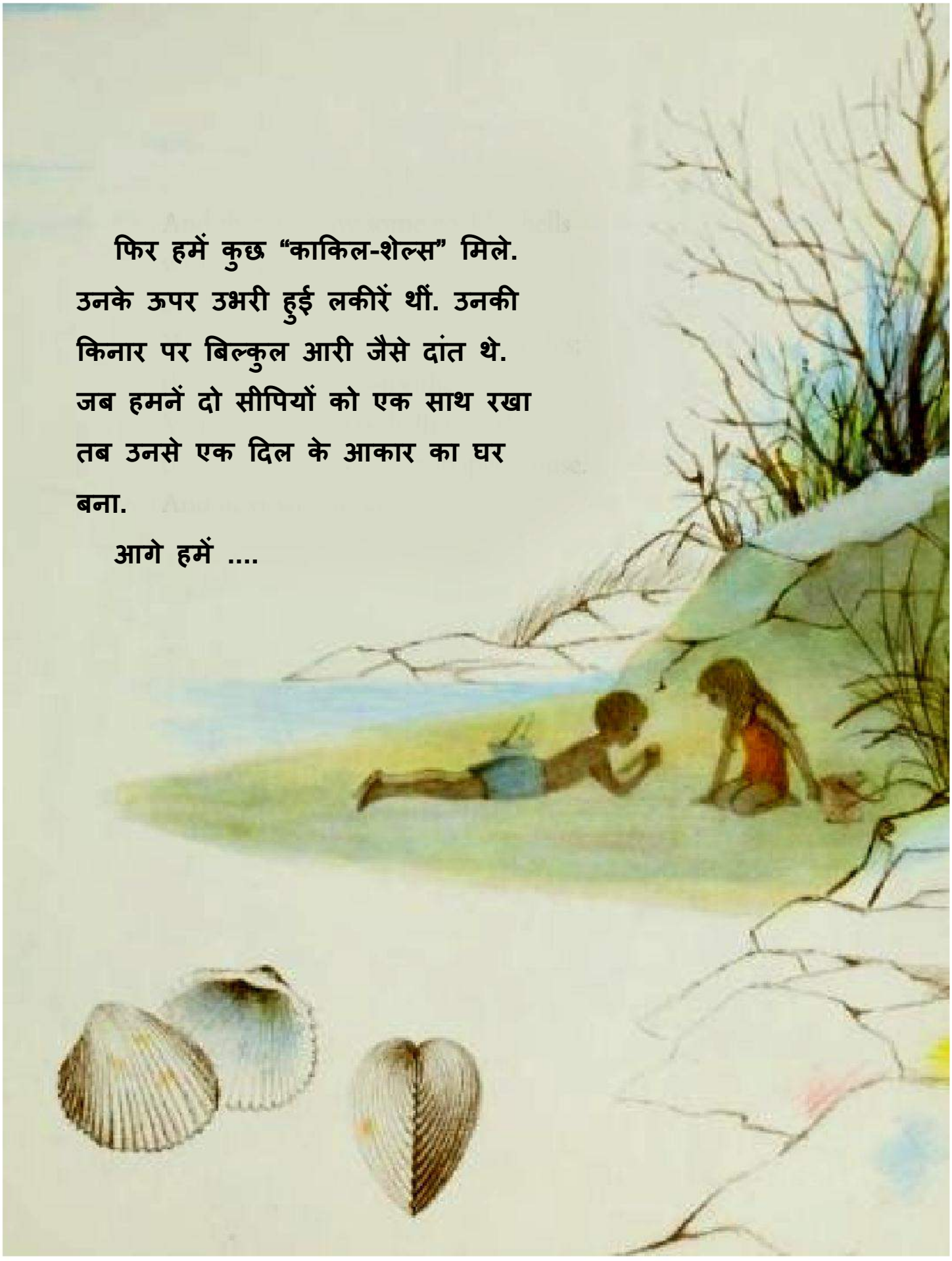

... कुछ बहुत मूल्यवान कौड़ियाँ मिलीं.

वो बहुत चमकीली और चिकनी थीं. उनपर सफ़ेद बिंदियाँ थीं. कौड़ियों के खुले स्थान पर छोटे-छोटे दांतों की दो लकीरें थीं. मुझे किसी ने बताया था कि एक ज़माने में लोग कौड़ियों को पैसों जैसे इस्तेमाल करते थे – जैसे आज हम सोने और चांदी का उपयोग करते हैं.

फिर हमने लहरों द्वारा तट पर लाई समुद्री खरपतवार के नीचे देखा. वहां हमें चिपकने वाली "लिम्पिट्स" दिखाई दीं. वो देखने में बिल्कुल चायनीज़ टोपियों जैसी लग रही थीं. उनके ऊपर छोटे-छोटे छेद थे.

समुद्री खरपतवार में लिपटे हमें कुछ पेरिविन्क्ल-शेल्स मिले.

हमें यह पता था कि सीपियों के उन छोटे घरों में कभी घोंघे रहते होंगे.

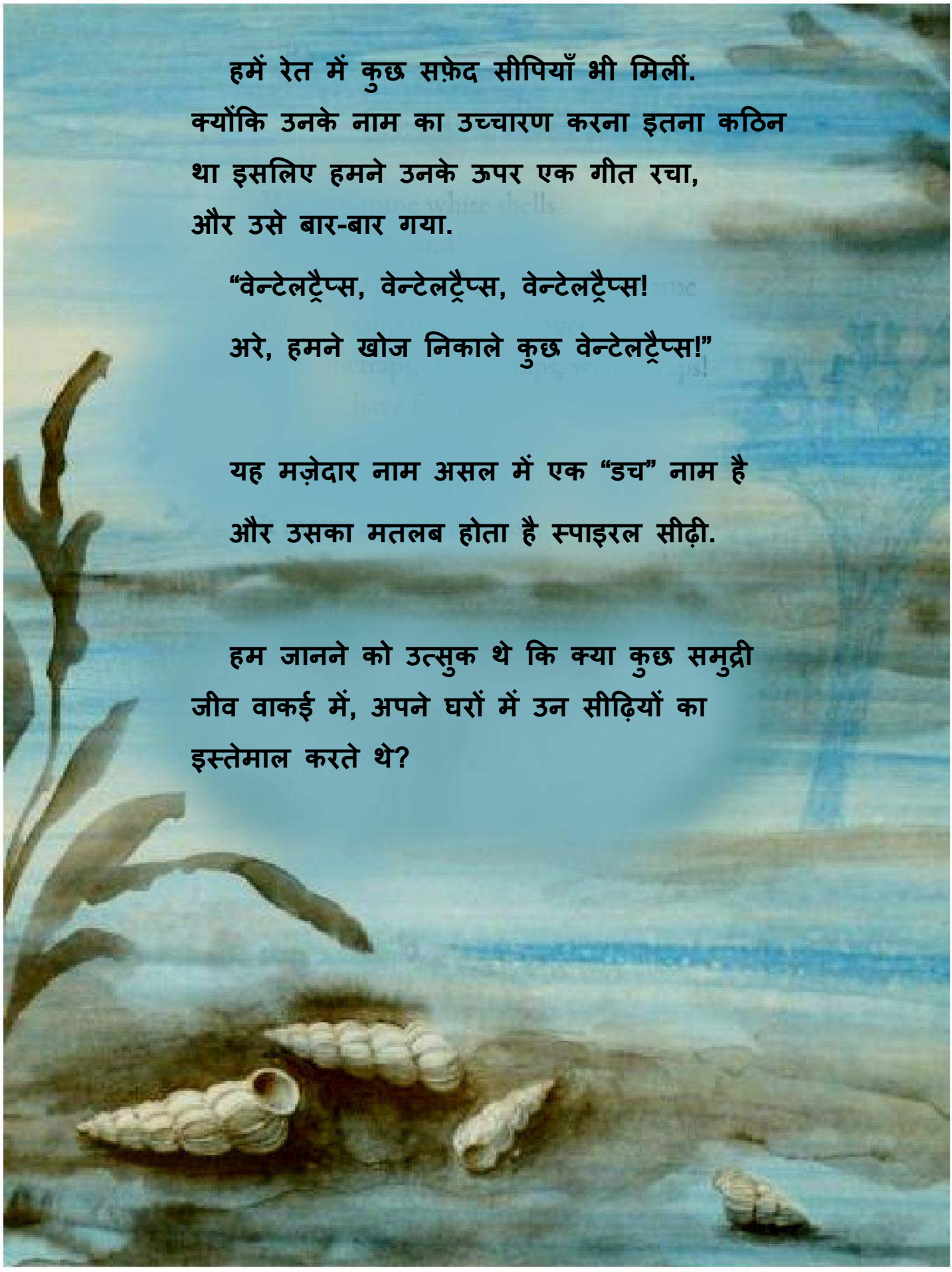

हमें रेत में कुछ सफ़ेद सीपियाँ भी मिलीं.
क्योंकि उनके नाम का उच्चारण करना इतना कठिन
था इसलिए हमने उनके ऊपर एक गीत रचा,
और उसे बार-बार गया.

"वेन्टेलट्रैप्स, वेन्टेलट्रैप्स, वेन्टेलट्रैप्स!
अरे, हमने खोज निकाले कुछ वेन्टेलट्रैप्स!"

यह मज़ेदार नाम असल में एक "डच" नाम है
और उसका मतलब होता है स्पाइरल सीढ़ी.

हम जानने को उत्सुक थे कि क्या कुछ समुद्री
जीव वाकई में, अपने घरों में उन सीढ़ियों का
इस्तेमाल करते थे?

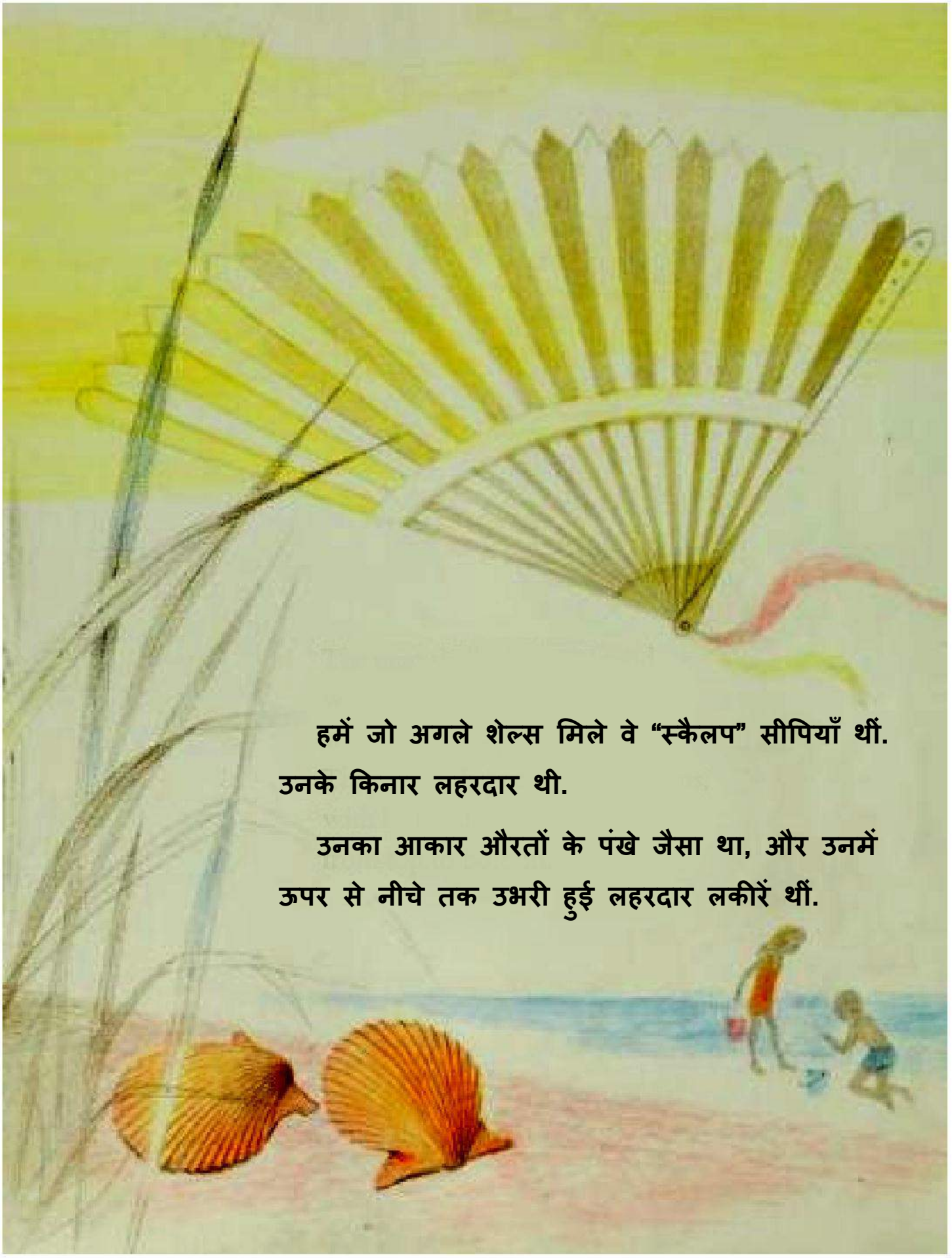

हमें जो अगले शेल्स मिले वे “स्कैलप” सीपियाँ थीं. उनके किनार लहरदार थी.

उनका आकार औरतों के पंखे जैसा था, और उनमें ऊपर से नीचे तक उभरी हुई लहरदार लकीरें थीं.

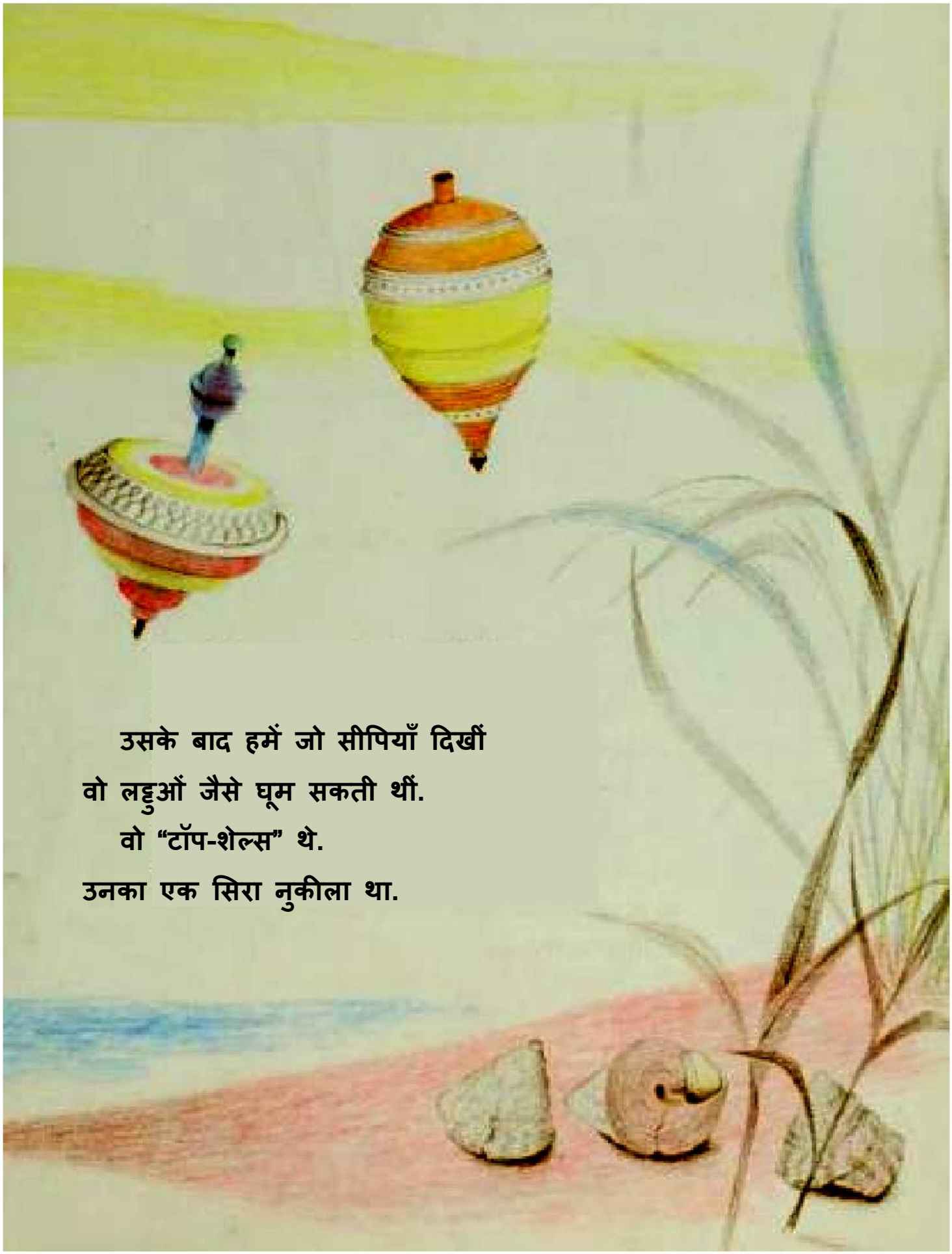

उसके बाद हमें जो सीपियाँ दिखीं
वो लट्टुओं जैसे घूम सकती थीं.
वो “टॉप-शेल्स” थे.
उनका एक सिरा नुकीला था.

फिर हमें चप्पलों के आकार की सीपियाँ दिखीं.
वो गहरे रंग की थीं और गीली रेत में धंसी थीं.
जल-प्रेतों को उन चप्पलों को पहनने में बहुत मज़ा
आता! उनके एक सिरे पर आधा हुड था.
हमें वो समुद्र में तैरती नावें जैसी लगीं.

फिर हम समुद्र तट पर आगे बढ़े. वहां हमें बिल्कुल अलग प्रकार की सीपियाँ दिखीं. अभी तक हमने उस प्रकार सीपियों को नहीं देखा था. वो देखने में किसी राजमहल के पतले, नुकीले बुर्ज़ जैसे लग रही थीं. वो “पेंच” या स्क्रू जैसे भी लगती थीं. उनके चारों ओर एक उभरा हुआ घुमावदार स्पाइरल था.

उसके बाद .....

...हमें कुछ "क्लैम-शेल्स" मिले. उनकी पीठ पर छोटी उभरी लकीरे थीं – जैसे पानी में गोलों के अन्दर गोले होते हैं. यह सीपियाँ अन्दर से मोती जैसी चमकीली और सफ़ेद थीं और उनकी किनार बैंगनी रंग की थीं. इन्डियनस इन कठोर सीपियों के अन्दर रहने वाले जीवों को कुअबोग्स-शेल्स बुलाते थे.

कुअबोग्स-शेल्स से इन्डियनस बहुत खूबसूरत सफ़ेद और बैंगनी ज्वेलरी बनाते थे. वो छोटे मोतियों को "वाम्पम" बुलाते थे और गोरे लोगों से व्यापार करते समय वो उन्हें पैसों जैसे इस्तेमाल करते थे.

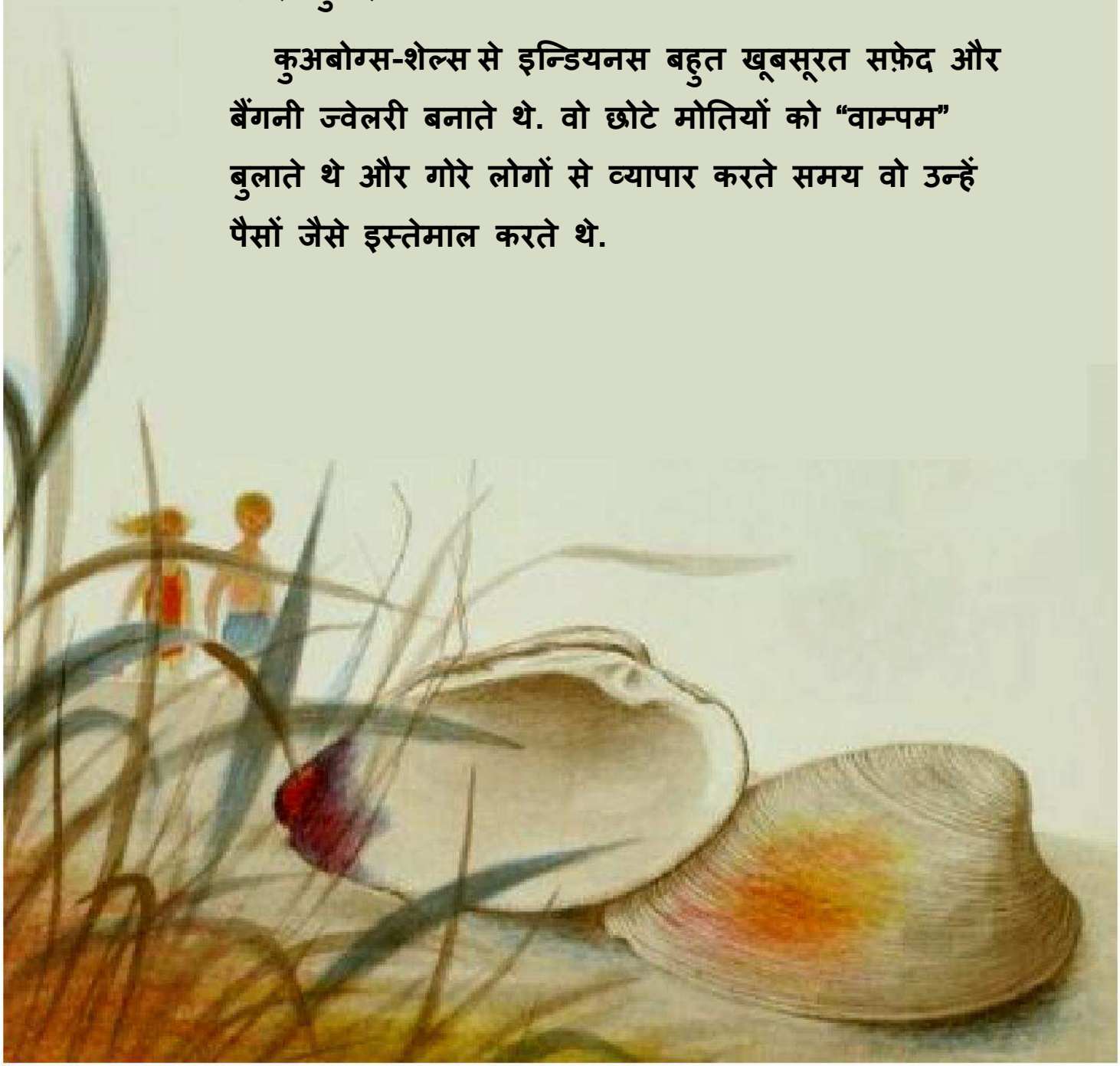

इन्डियनस उनसे छोटे-छोटे मोतियों की मालाएं, बेल्ट और कालर बनाते थे.

इन्डियनस हमारे देश के पहले वाशिंदों को वे चीज़ें “शांति-उपहार” जैसे भेंट करते थे.

फिर मुझे एक समुद्री चील (सी-गल) की आवाज़ सुनाई दी.
वो बिल्कुल मेरे सिर के ऊपर से उड़ रही थी.
मुझे समुद्र में दूर एक नाव की आवाज़ भी सुनाई दी.
फिर मुझे अपनी बहन की आवाज़ सुनाई दी,
“अरे देखो!” बहन ने कहा.
“मुझे एक चलती हुई सीपी दिख रही है!”
फिर मैंने भी उस तरफ देखा.
मुझे रेत पर एक मून-शैल (चन्द्रमा-सीपी) चलती हुई दिखाई दी.

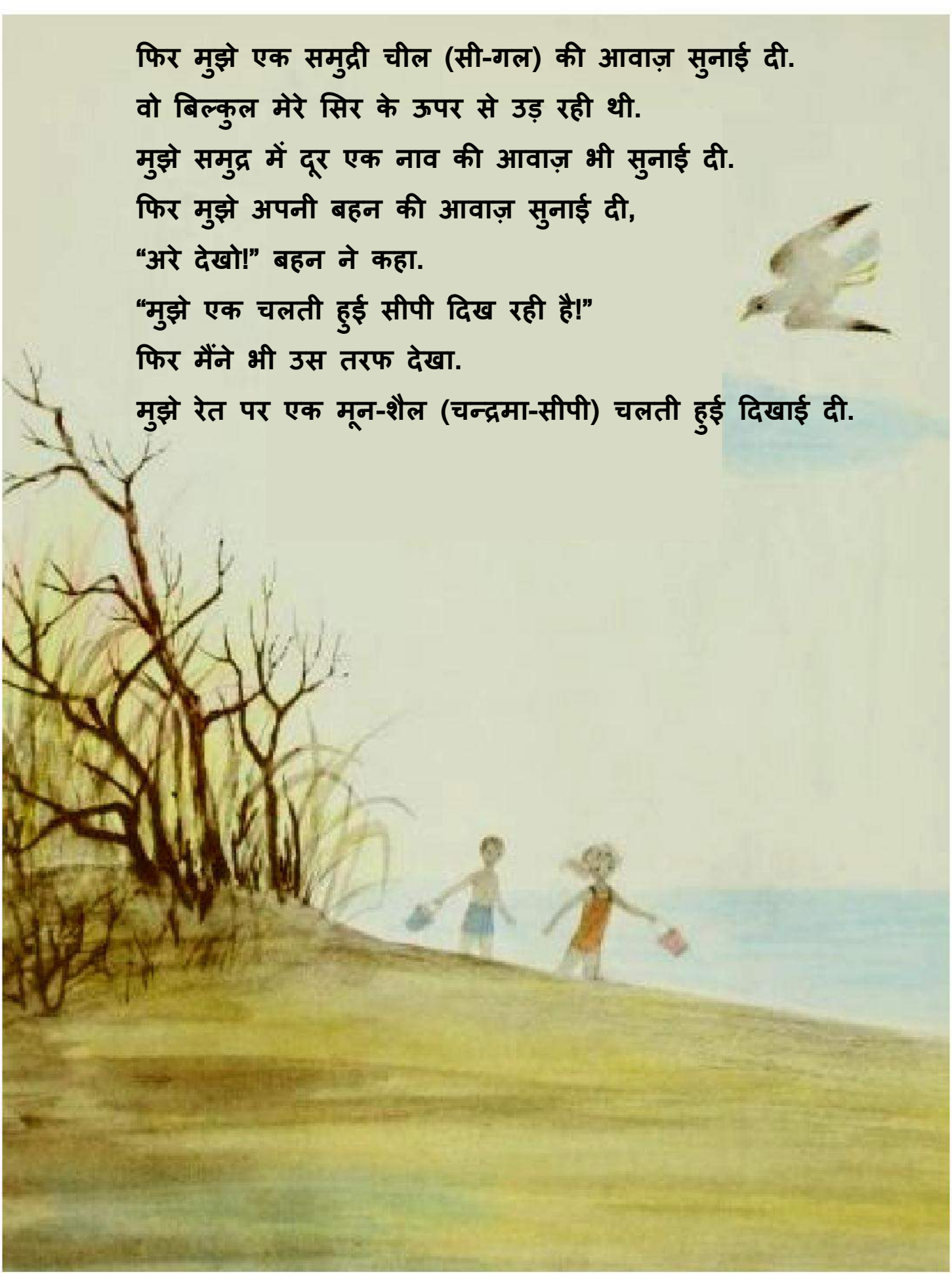

एक हर्मिट-केकड़ा एक सीपी के अन्दर घुस गया था.

वो उसे अपने घर जैसे इस्तेमाल कर रहा था.

जैसे-जैसे वो हर्मिट-केकड़ा समुद्र तट पर चलता,

वो अपने साथ पीठ पर, अपना घर भी लेकर चलता.

जब हमने हर्मिट-केकड़े को गौर से देखा,

तो उसने भी अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हमें घूरा.

मैंने अपनी बहन को बताया कि हर्मिट-केकड़ा

अपने मुलायम शरीर को सुरक्षित रखने के लिए

उस कठोर सीपी के अन्दर घुसा होगा.

बड़ा होने पर हर्मिट-केकड़े के लिए मून-शैल का घर बहुत छोटा पड़ेगा.

फिर वो घर बनाने के लिए कोई बड़ी सीपी खोजेगा.

हमें जो सीपियाँ सबसे बाद में मिलीं

वो सबसे बड़ी और अच्छी थीं.

वो थे “व्हेल्क-शेल्स”. वो एक साइड से खुले थे.

हमने उनके खुले भाग को अपने कान के पास रखा और सुना.

हमें सीपी के अन्दर से समुद्र का सम्पूर्ण संगीत सुनाई दिया.

हमें उस सीपी में दूर स्थित समुद्री लहरों की आवाज़ सुनाई दी.

और हवा की हल्की फुसफुसाहट भी.

हम बहुत खुश थे उन सीपियाँ को पाकर

उन सीपियों ने अपने अन्दर समुद्र के संगीत को संजोकर रखा था.

अब धीरे-धीरे सूरज ढल रहा था

और शाम होने को आई थी.

अब ज्वार की ऊंची लहरें आना शुरू हो गई थीं.

समुद्र के पानी से अब पूरा तट भर गया था.

हमारी बाल्टियाँ भी अब खजाने से भर चुकी थीं

इसलिए उन्हें लेकर हम घर की तरफ बढ़े.

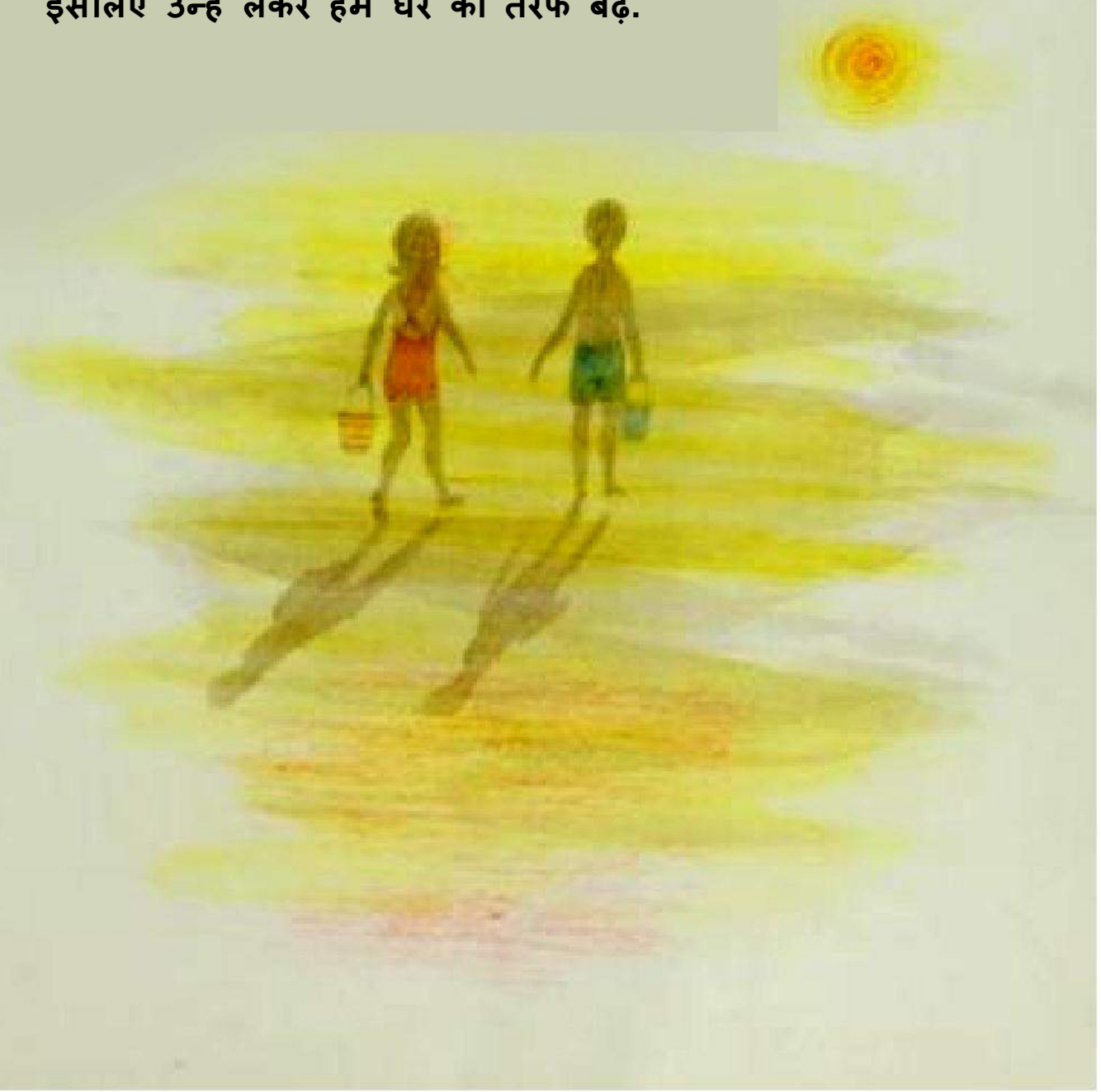

जब बारिश वाले दिन दोस्त

हमारे घर पर खेलने के लिए आते,

तब हम उन्हें अपना सीपियों का खज़ाना दिखाते हैं.

हम उन्हें उन सीपियों के नाम बताते हैं.

और वो स्थान बताते हैं जहाँ वो हमें मिली थीं.

हम उन्हें समुद्र-तट की अपनी यात्रा की

पूरी कहानी भी सुनाते हैं.

angel wings

एंजेल-विंग्स

wedge shell

वैज-शैल

slipper shell

स्लिपर-शैल

top shell

टॉप-शैल

moon shell

मून-शैल

turret shell

टरेट-शैल

cockle shell

काकिल-शैल

clam shell

क्लैम-शैल

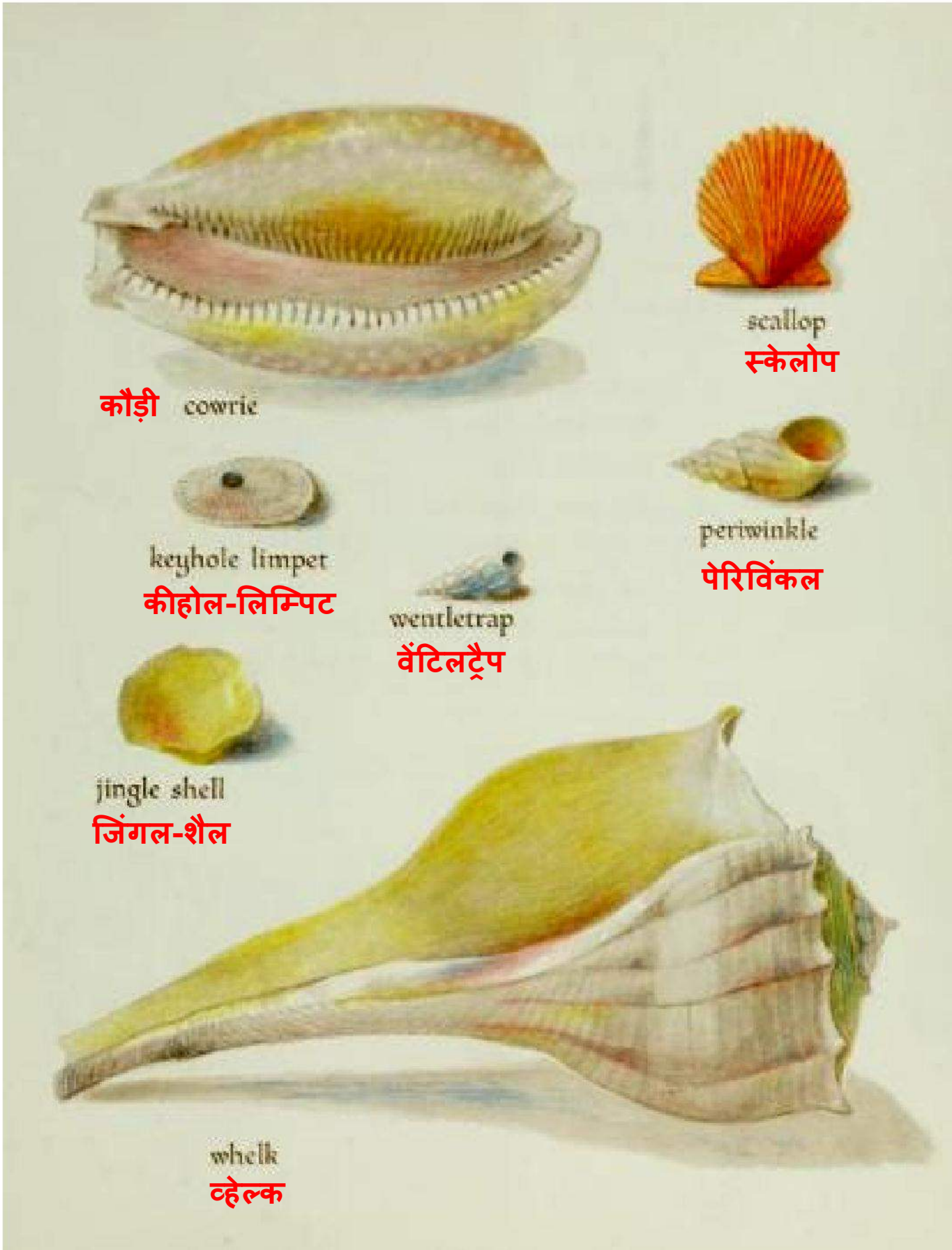
scallop
स्केलोप
कौड़ी cowrie
periwinkle
पेरिविंकल
keyhole limpet
कीहोल-लिम्पिट
wentletrap
वेंटिलट्रैप
jingle shell
जिंगल-शैल
whelk
व्हेल्क

मुझे पक्का पता है कि मैं सीप जैसा

सुन्दर घर कभी नहीं बना पाऊँगा.

इन सुन्दर घरों को समुद्र में रहने वाले जीव

अपनी सुरक्षा के लिए बनाते हैं.

उनके अलग-अलग आकार होते हैं.

वे रंग-बिरंगे होते हैं.

हर जीव एक ऐसा अनूठा घर बनाता है,

जो उसकी ज़रूरतों के लिए सबसे उपयुक्त होता है.

मैं उम्मीद करता हूँ कि हम दुबारा समुद्र के तट पर जायेंगे

और वहां से और बहुत सी सीपियों के घर इकट्ठे करके लायेंगे.

सीपियाँ कैसे बनती हैं?

कभी-कभी आपको समुद्र के तट पर ऐसी सीपियाँ मिलेंगी जिनके अन्दर जिंदा जीव रह रहे होंगे. ऐसी सीपियाँ मिलने की सम्भावना तूफ़ान के बाद ज्यादा होगी. तब समुद्र की लहरें इन सीपियों को तट पर लाकर बिखरा देंगी.

सीपियाँ और उनके अन्दर के जीव – दोनों को "मोलस्क" के नाम से जाना जाता है.

बहुत से बेबी "मोलस्क" अपनी माँ के शरीर के अन्दर पैदा अंडों से जन्म लेते हैं.

"मोलस्क" की रीढ़ की हड्डी नहीं होती है. उसका शरीर बहुत कोमल और मुलायम होता है. इसलिए जब "मोलस्क" बहुत छोटा होता है, तभी से वो अपनी सुरक्षा के लिए चारों ओर एक कठोर कवच रचना शुरू कर देता है. यह कठोर कवच उस जीव की समुद्र की तेज़ लहरों और दुश्मनों से सुरक्षा करता है. कई "मोलस्क" अपने घर का निर्माण तभी शुरू कर देते हैं जब वे अंडे के अन्दर होते हैं.

कुछ "मोलस्क" अपने शेल (घर) को सिंगल-पीस या एक वाल्व का बनाते हैं. इन सीपियों को "यूनी-वाल्व" के नाम से जाना जाता है. "यूनी" का मतलब होता है एक. व्हेल्क और घोंघों के शैल एक-पीस के होते हैं. इसलिए उन्हें "यूनी-वाल्व" कहा जाता है.

कुछ अन्य "मोलस्क" जैसे क्लैम्स और स्कालोप अपने शेल को दो हिस्सों या वाल्व में बनाते हैं. यह दो हिस्सों के घर "बाई-वाल्व" कहलाते हैं. यह दोनों भाग पीछे की ओर एक कब्ज़े से जुड़े होते हैं. जब आप इस "बाई-वाल्व" को खोलेंगे तो वो एक किताब जैसे खुलेगा.

"मोलस्क" के शरीर का एक ख़ास हिस्सा कठोर घर बनाने का काम करता है. इस विशेष भाग को "मैन्टिल" कहते हैं.

"मैन्टिल" असल में "मोलस्क" की पतली त्वचा होती है जो उसके कोमल और मुलायम शरीर को ढंकती है. "मैन्टिल" शरीर और शैल के बीच में स्थित होती है.

आप कभी “मैन्टिल” को देख भी पायेंगे. वो कुछ सीपियों की बाहरी किनार पर निकली होती है. वो एक लहरदार झालर जैसी होती है और अक्सर सुन्दर और चटकीले रंगों की होती है.

सीपी के निर्माण के लिए सामिग्री “मैन्टिल” में से टपकती रहती है. यह सामिग्री बहुत जल्दी ही सख्त हो जाती है और उसी से शैल या सीप बनता है. जैसे-जैसे “मोलस्क” का कोमल शरीर आकार में बढ़ता है वैसे-वैसे “मैन्टिल” अधिक निर्माण सामिग्री जोड़ती है जो सख्त होकर शैल को और बड़ा बनाता है. रंगीन सामिग्री भी “मैन्टिल” से ही टपकती है और वो शैल पर रंग-बिरंगे नमूने बनाती है.

“मैन्टिल” से टपकने वाली अधिकतर सामिग्री चूना होती है. चूने के कारण ही शैल या सीपियाँ सख्त होती हैं. “मोलस्क” को यह चूना अपने खाने में मिलता है बिल्कुल उसी तरह जैसे मनुष्य भोजन से अपने शरीर का विकास करते हैं.

इस प्रकार समुद्र तट में मिली सभी सीपियाँ उन जीवों ने बनाई थीं जो कभी समुद्र में उन सीपियों के घरों में रहते थे.